प्रभारती

BULLETIN OF THE DEPARTMENT OF ANCIENT INDIAN HISTORY, CULTURE & ARCHAEOLOGY

Vol. 41 2016-17

Editor
Pushp Lata Singh

A REFREED JOURNAL

CENTRE OF ADVANCED STUDY
DEPARTMENT OF ANCIENT INDIAN HISTORY, CULTURE & ARCHAEOLOGY
BANARAS HINDU UNIVERSITY
VARANASI-221 005 (INDIA)

हरीसिंह गौर पुरातात्त्विक संग्रहालय, सागर, मध्य प्रदेश की हरिहर हिरण्यगर्भ प्रतिमा : एक अवलोकन

सुरेन्द्र कुमार यादव

भारतीय प्रतिमा विज्ञान में विभिन्न सम्प्रदायों के बीच धार्मिक सहिष्णुता को अभिव्यक्त करने के लिये दो या उससे अधिक देवताओं को एक साथ संयुक्त कर दर्शाया गया है। ये प्रतिमाएं भारतीय धार्मिक समन्वय परम्परा के उद्‌बोधक हैं। अपनी विलक्षणता को रूपायित करने वाली इन प्रतिमाओं में अलग–अलग देवताओं की विशेषताएं यथा शरीरांग, आयुध, वाहन आदि को एक साथ अंगीकृत किया जाता है। इस प्रकार से संबंधित प्रतिमा को संपृक्त, संघाट, देहार्थधारिन्, कान्तासंयुक्त एवं एकीभूतवपु आदि नामों से अभिहित किया जाता है। इनमें दो से अधिक सम्प्रदायों से संबंधित प्रतिमाओं में हरिहरार्क, हरिहर पितामह, हरिहरार्क पितामह एवं हरिहर हिरण्यगर्भ प्रमुख हैं। प्रस्तुत शोध पत्र हरिहर हिरण्यगर्भ प्रतिमा के अध्ययन पर आधारित है। यह प्रतिमा मध्य प्रदेश के सागर जिले में अवस्थित डॉ0 हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के हरीसिंह गौर पुरातात्त्विक संग्रहालय में प्रदर्शित है।

हिन्दू धर्म की अवधारणा के अनुसार 'त्रिदेव' ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश की उत्पत्ति क्रमशः सृष्टि की रचना, पालन और संहार को कार्यान्वित करने के लिये हुयी है। यजुर्वेद संहिता में वर्णित है कि भगवान रुद्रदेव ने प्रयोजन के निमित्त अपनी एक मूर्ति को तीन रुपों में धारण किया, जिनमें कार्यरुप में विष्णु, क्रियारुप में ब्रह्मा एवं कारणरुप में महेश्वर हैं।[1] कालान्तर में त्रिमूर्ति की इस संयुक्त अवधारणा में सूर्य को भी समाहित कर लिया गया। मार्कण्डेयपुराण मे प्रकाशवान सूर्य के विद्या स्वरूप को ही ब्रह्मा, शिव और विष्णु का शरीर बताया गया है।[2] शारदातिलक तन्त्र में ब्रह्मा, विष्णु और शिव के साथ सूर्य का उल्लेख हुआ है।[3] इस ग्रन्थ में वर्णित है कि सूर्य ध्यान साधना का आधार है। वह ब्रह्मा, विष्णु और शिव से एकरूप है, इसलिए सूर्य आराधना के साथ इन सबकी भी सम्मिलित आराधना होनी चाहिए।[4] ब्रह्मपुराण एवं मत्स्यपुराण में भी हरिहर हिरण्यगर्भ का वर्णन किया गया है।

भारतीय प्रतिमा विज्ञान में ब्रह्मा, विष्णु, शिव के साथ सूर्य की प्रतिमा का विवरण मिलता है। ऐसी प्रतिमाओं को हरिहरार्क पितामह, हरिहर सूर्य पितामह या हरिहर हिरण्यगर्भ आदि नामों से अभिहित किया गया है। इस प्रकार हरिहर हिरण्यगर्भ प्रतिमा ब्राह्मण धर्म के चार प्रधान देवों–ब्रह्मा, विष्णु, शिव और सूर्य का समन्वित रूप है। इस मूर्ति स्वरूप में इन चारों देवों के आयुध, वाहन एवं सामान्य लक्षण एक साथ प्रदर्शित किए जाते हैं। शिल्पग्रन्थों के अनुसार हरिहर हिरण्यगर्भ प्रतिमा चतुर्मुख और अष्टभुज होती है। अष्टभुज प्रतिमा में क्रमशः सर्वप्रथम सम्मुख दो करों में सूर्य के आयुध पद्म, शिव के आयुध खाट्‌वांग एवं त्रिशूल, विष्णु के शंख एवं चक्र तथा ब्रह्मा के कमण्डलु एवं अक्षमाला का प्रदर्शन होता है। मूर्ति के चार मुख क्रमशः सूर्य, ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव के सूचक हैं। देवतामूर्तिप्रकरण में हरिहर हिरण्यगर्भ मूर्ति का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है।[5] अपराजितपृच्छा में सर्वप्रथम हरिहर हिरण्यगर्भ नाम से विष्णु, शिव, सूर्य और ब्रह्मा की समन्वित प्रतिमा का उल्लेख मिलता है।[6]

चतुर्वक्त्रं चाष्टबाहुं चतुष्कैकनिवासनम्। ऋज्वागतो मुखः कार्यः पद्महस्तो दिवाकरः।।
खट्‌वांगत्रिशूलहस्तो रुद्रो दक्षिणतः शुभः। कमण्डलुं चाक्षसूत्रमपरे स्यात्पितामहः।।
वामे तु संस्थितश्चैवं शङ्खचक्रधरो हरिः। एवं विधं प्रकर्त्तव्यं सर्वकामफलप्रदम्।।